राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियाँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» नए राष्ट्र की प्रमुख चुनौतियाँ

प्रश्न 1 (आसान). 1947 में भारत की एकता के संबंध में क्या बड़ी समस्या थी?
उत्तर – भारत में अलग-अलग भाषा, धर्म और संस्कृति के लोग रहते थे, और देश का बँटवारा भी हुआ था, जिससे सबको एक रखना मुश्किल था।

प्रश्न 2 (आसान). लोकतंत्र स्थापित करने के लिए संविधान में कौन सा अधिकार दिया गया था?
उत्तर – संविधान में हर नागरिक को मतदान का अधिकार दिया गया था।

प्रश्न 3 (मध्यम). समावेशी विकास से क्या मतलब है और यह उस समय एक चुनौती क्यों था?
उत्तर – समावेशी विकास का मतलब है सबका भला हो, न कि सिर्फ कुछ लोगों का। यह चुनौती इसलिए थी क्योंकि गरीबी बहुत थी और नीतियाँ ऐसी बनानी थीं जो सबका आर्थिक विकास करें।

प्रश्न 4 (कठिन). क्या आपको लगता है कि ये तीनों चुनौतियाँ आज भी किसी न किसी रूप में हमारे सामने हैं? कैसे?
उत्तर – हाँ, ये चुनौतियाँ आज भी कुछ हद तक मौजूद हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए हमें अभी भी क्षेत्रीय और भाषाई विवादों से निपटना पड़ता है। लोकतंत्र में पारदर्शिता और जनभागीदारी की चुनौतियाँ हैं, और समावेशी विकास के लिए गरीबी, असमानता और सभी तक सुविधाओं को पहुँचाना एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है।

» विभाजन: द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और प्रक्रिया

प्रश्न 5 (आसान). द्वि-राष्ट्र सिद्धांत किसने दिया था?
उत्तर – मुस्लिम लीग ने।

प्रश्न 6 (आसान). विभाजन का मुख्य आधार क्या तय किया गया था?
उत्तर – धार्मिक बहुसंख्या।

प्रश्न 7 (मध्यम). द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का अर्थ अपनी भाषा में समझाइए।
उत्तर – इसका अर्थ था कि भारत में दो प्रमुख समुदाय (हिंदू और मुसलमान) रहते हैं, और वे दो अलग-अलग राष्ट्रों के हकदार हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). भारत के विभाजन की प्रक्रिया में कौन से दो राज्य सबसे अधिक प्रभावित हुए थे और क्यों?
उत्तर – पंजाब और बंगाल। क्योंकि इन राज्यों में मुस्लिम और गैर-मुस्लिम आबादी लगभग बराबर थी, इसलिए इनका विभाजन करना बेहद जटिल और दर्दनाक रहा।

» विभाजन की कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ

प्रश्न 9 (आसान). पाकिस्तान में शामिल किए गए मुस्लिम बहुल क्षेत्र भारत के किस-किस दिशा में थे?
उत्तर – पश्चिम और पूर्व दिशा में।

प्रश्न 10 (आसान). खान अब्दुल गफ्फार खान को किस नाम से जाना जाता था?
उत्तर – सीमांत गांधी।

प्रश्न 11 (मध्यम). विभाजन के दौरान किन दो भारतीय प्रांतों का बँटवारा सबसे मुश्किल और दर्दनाक रहा?
उत्तर – पंजाब और बंगाल।

प्रश्न 12 (कठिन). अल्पसंख्यकों की समस्या विभाजन की सबसे अबूझ कठिनाई क्यों थी?
उत्तर – क्योंकि अचानक लाखों लोग अपने ही घरों में 'विदेशी' बन गए, उन्हें पता नहीं था कि वे किस देश के नागरिक हैं और उन्हें बेघर होना पड़ा। इस समस्या से निपटने की कोई योजना नहीं थी।

» विभाजन के परिणाम और त्रासदी

प्रश्न 13 (आसान). विभाजन के कारण कितने लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा?
उत्तर – लगभग 80 लाख लोग।

प्रश्न 14 (आसान). विभाजन के दौरान किन शहरों में सबसे ज़्यादा हिंसा हुई?
उत्तर – लाहौर, अमृतसर और कलकत्ता।

प्रश्न 15 (मध्यम). विभाजन के कारण महिलाओं को किन त्रासदियों का सामना करना पड़ा?
उत्तर – हज़ारों महिलाओं का अपहरण किया गया, उन्हें जबरन शादी करनी पड़ी और अपना धर्म बदलना पड़ा। कई मामलों में तो परिवार के लोगों ने ही 'इज्जत' बचाने के नाम पर उन्हें मार दिया।

प्रश्न 16 (कठिन). विभाजन के बाद लोगों के लिए 'आज़ादी' का क्या मतलब था और उन्होंने इसे कैसे अनुभव किया?
उत्तर – विभाजन के बाद लोगों के लिए 'आज़ादी' का मतलब था महीनों और कभी-कभी सालों तक किसी शरणार्थी शिविर में ज़िंदगी काटना। उन्हें अपना घर, ज़मीन, पहचान सब खोना पड़ा, और हिंसा, डर व अनिश्चितता के माहौल में जीना पड़ा। यह उनके लिए 'दिल के दो टुकड़े हो जाने' जैसा था।

» महात्मा गांधी की शहादत और धर्मनिरपेक्षता

प्रश्न 17 (आसान). गांधी जी की हत्या कब हुई?
उत्तर – 30 जनवरी 1948

प्रश्न 18 (आसान). गांधी जी ने विभाजन के दौरान किन शहरों में विशेष रूप से शांति के लिए काम किया?
उत्तर – कोलकाता और दिल्ली

प्रश्न 19 (मध्यम). धर्मनिरपेक्षता से आप क्या समझते हैं और गांधी जी ने इसके लिए क्या प्रयास किए?
उत्तर – धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि राज्य की नज़रों में सभी धर्म समान हैं और किसी के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। गांधी जी ने हिंसा रोकने के लिए उपवास किए और हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया।

प्रश्न 20 (कठिन). गांधी जी की शहादत ने भारत के धर्मनिरपेक्ष आदर्श को कैसे मजबूत किया, विस्तार से समझाएं।
उत्तर – गांधी जी की शहादत ने दुनिया को दिखा दिया कि भारत अपने धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के लिए कितना प्रतिबद्ध है। उनकी मृत्यु एक चेतावनी थी कि अगर हमने सांप्रदायिक नफरत को नहीं रोका, तो हम अपने देश के मूल सिद्धांतों को खो देंगे। उनकी शहादत ने भारत के नेताओं और जनता को धर्मनिरपेक्षता के रास्ते पर बने रहने के लिए प्रेरित किया, यह उनके जीवन के संदेश का सबसे बड़ा प्रमाण बन गई।

» रजवाड़ों का विलय और समस्याएँ

प्रश्न 21 (आसान). आज़ादी के समय भारत में कितने रजवाड़े थे?
उत्तर – 565 से ज़्यादा

प्रश्न 22 (आसान). रजवाड़ों के विलय में किस नेता ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
उत्तर – सरदार वल्लभभाई पटेल

प्रश्न 23 (मध्यम). इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन क्या था और इसका क्या महत्व था?
उत्तर – यह एक सहमति पत्र था जिस पर रजवाड़ों के शासकों ने हस्ताक्षर कर भारतीय संघ में शामिल होने की सहमति दी। इसका महत्व यह था कि इसके द्वारा रियासतें कानूनी तौर पर भारत का अंग बनीं।

प्रश्न 24 (कठिन). हैदराबाद के निज़ाम को दुनिया के सबसे धनी लोगों में क्यों गिना जाता था, और उसने भारत में विलय का विरोध क्यों किया?
उत्तर – निज़ाम की रियासत बहुत बड़ी और संसाधन संपन्न थी, जिससे वह बेहद धनी था। उसने भारत में विलय का विरोध इसलिए किया क्योंकि वह अपनी रियासत को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में बनाए रखना चाहता था, अपनी शक्ति और प्रभुत्व को खोना नहीं चाहता था।

» सरकार का नज़रिया और सरदार पटेल की भूमिका

प्रश्न 25 (आसान). आज़ादी के बाद, भारत सरकार का रजवाड़ों के प्रति पहला प्रमुख नज़रिया क्या था?
उत्तर – सरकार चाहती थी कि अधिकांश रजवाड़े भारतीय संघ में शामिल हों।

प्रश्न 26 (आसान). सरदार पटेल को 'भारत का लौह पुरुष' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – उनकी दृढ़ता और समझदारी के लिए, खासकर रियासतों के एकीकरण में।

प्रश्न 27 (मध्यम). इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन क्या था और उस पर हस्ताक्षर करने का क्या महत्व था?
उत्तर – यह एक सहमति पत्र था जिस पर रजवाड़ों के शासकों ने भारतीय संघ में विलय के लिए हस्ताक्षर किए थे। इसका महत्व था कि रियासतें कानूनी रूप से भारत का हिस्सा बन गईं।

प्रश्न 28 (कठिन). सरकार ने रजवाड़ों के प्रति लचीला रुख क्यों अपनाया था, खास तौर पर कुछ इलाकों को स्वायत्तता देने के मामले में?
उत्तर – सरकार ने विभिन्नताओं का सम्मान करने और विभिन्न क्षेत्रों की मांगों को संतुष्ट करने के लिए लचीला रुख अपनाया था, जैसे जम्मू-कश्मीर में। इससे क्षेत्रीय अखंडता भी बनी रहती थी।

» हैदराबाद का भारतीय संघ में विलय

प्रश्न 29 (आसान). हैदराबाद का शासक क्या कहलाता था?
उत्तर – निजाम

प्रश्न 30 (आसान). हैदराबाद को स्वतंत्र रखने की इच्छा किसकी थी?
उत्तर – निजाम की

प्रश्न 31 (मध्यम). रजाकार कौन थे और उन्होंने क्या किया?
उत्तर – रजाकार निजाम के अर्ध-सैनिक बल थे, जो सांप्रदायिक और अत्याचारी थे। उन्होंने गैर-मुसलमानों पर अत्याचार, लूटपाट, हत्या और बलात्कार किए।

प्रश्न 32 (कठिन). भारतीय सेना ने हैदराबाद में कब और क्यों हस्तक्षेप किया?
उत्तर – भारतीय सेना ने सितंबर 1948 में हस्तक्षेप किया क्योंकि निजाम का दमनकारी शासन और रजाकारों के अत्याचार बढ़ गए थे, जिससे कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ गई थी और जन आंदोलन हिंसक हो रहा था।

» मणिपुर का भारतीय संघ में विलय

प्रश्न 33 (आसान). मणिपुर के महाराजा का क्या नाम था जिन्होंने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए?
उत्तर – महाराजा बोधचंद्र सिंह

प्रश्न 34 (आसान). भारत का कौन सा पहला भाग था जहाँ सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव हुए?
उत्तर – मणिपुर

प्रश्न 35 (मध्यम). मणिपुर की विधानसभा में विलय के मुद्दे पर क्या स्थिति थी?
उत्तर – कांग्रेस पार्टी विलय के पक्ष में थी, जबकि अन्य राजनीतिक पार्टियाँ इसके खिलाफ थीं।

प्रश्न 36 (कठिन). मणिपुर के विलय में हैदराबाद रियासत से मुख्य अंतर क्या था?
उत्तर – हैदराबाद में सेना का हस्तक्षेप हुआ, जबकि मणिपुर में विलय मुख्यतः सहमति पत्र, चुनाव और महाराजा को राजी करके किया गया, बिना किसी सैन्य कार्रवाई के।

» राज्यों का भाषाई पुनर्गठन: मांग और चुनौतियाँ

प्रश्न 37 (आसान). कांग्रेस ने किस वर्ष के अधिवेशन में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का वादा किया था?
उत्तर – 1920 के नागपुर अधिवेशन में।

प्रश्न 38 (आसान). आजादी से पहले प्रांतों की सीमाएँ किस आधार पर तय होती थीं?
उत्तर – प्रशासनिक सुविधा या ब्रिटिश सरकार द्वारा जीते गए क्षेत्रों के आधार पर।

प्रश्न 39 (मध्यम). स्वतंत्रता के बाद भारतीय नेतृत्व ने भाषाई राज्यों की मांग को क्यों स्थगित किया?
उत्तर – उन्हें डर था कि इससे अव्यवस्था फैल सकती है, देश की एकता टूट सकती है, और दूसरी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों से ध्यान भटक सकता है।

प्रश्न 40 (कठिन). पोट्टी श्रीरामुलु के बलिदान ने भाषाई राज्यों के पुनर्गठन की मांग को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – उनकी 56 दिनों की भूख हड़ताल और मृत्यु ने व्यापक हिंसक आंदोलन को जन्म दिया, जिससे सरकार पर अलग आंध्र प्रदेश बनाने का दबाव पड़ा और अंततः दिसंबर 1952 में इसकी घोषणा हुई।

» आंध्र प्रदेश का निर्माण और राज्य पुनर्गठन आयोग

प्रश्न 41 (आसान). पोट्टी श्रीरामुलु ने किस भाषा के लोगों के लिए आंदोलन किया?
उत्तर – तेलुगु

प्रश्न 42 (आसान). आंध्र प्रदेश के गठन से पहले वह किस प्रांत का हिस्सा था?
उत्तर – मद्रास प्रांत

प्रश्न 43 (मध्यम). राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1953

प्रश्न 44 (कठिन). पोट्टी श्रीरामुलु के बलिदान का भारतीय राजनीति पर क्या तात्कालिक प्रभाव पड़ा?
उत्तर – उनके बलिदान के कारण भारत सरकार को भाषाई आधार पर आंध्र प्रदेश का गठन करना पड़ा, जिससे अन्य भाषाई समूहों में भी अपने अलग राज्य बनाने की मांग तेज हो गई। इसी के फलस्वरूप राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन हुआ।

» भाषाई राज्यों का महत्व और निरंतर प्रक्रिया

प्रश्न 45 (आसान). राज्य पुनर्गठन अधिनियम किस वर्ष पारित हुआ?
उत्तर – 1956

प्रश्न 46 (आसान). 1956 के अधिनियम के तहत कितने राज्य बनाए गए थे?
उत्तर – 14

प्रश्न 47 (मध्यम). भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का देश की एकता पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – राष्ट्रीय एकता मजबूत हुई और अलगाववाद की भावना कम हुई।

प्रश्न 48 (कठिन). आज़ादी के बाद भाषाई राज्यों की मांग को लेकर नेताओं को क्या चिंता थी और यह चिंता कैसे गलत साबित हुई?
उत्तर – नेताओं को डर था कि भाषाई राज्य बनने से देश की एकता को खतरा होगा और अलगाववाद बढ़ेगा। लेकिन यह गलत साबित हुआ क्योंकि भाषाई आधार पर राज्यों के गठन ने क्षेत्रीय पहचान को मान्यता दी, जिससे लोगों में अपनेपन की भावना बढ़ी और देश की एकता मजबूत हुई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. 1947 में भारत के सामने सबसे बड़ी तीन प्रमुख चुनौतियाँ क्या थीं?

› सबसे पहली चुनौती थी 'राष्ट्रीय एकता' – यानी इतने सारे अलग-अलग लोगों को एक राष्ट्र के रूप में कैसे जोड़ें, जहाँ सबकी पहचान सुरक्षित रहे।

› दूसरी चुनौती थी 'लोकतंत्र की स्थापना' – मतलब, एक ऐसा सिस्टम बनाना जहाँ जनता अपनी सरकार खुद चुने और सबके अधिकार सुरक्षित रहें।

› और तीसरी चुनौती थी 'समावेशी विकास' – यानी, सिर्फ कुछ लोगों का नहीं, बल्कि समाज के हर तबके का भला हो, चाहे वो अमीर हो या गरीब, किसी भी जाति या धर्म का हो।

उत्तर – भारत के सामने राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र की स्थापना और समावेशी विकास की चुनौतियाँ थीं।

उदाहरण 2. प्रश्न: 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' का क्या अर्थ था और मुस्लिम लीग ने इसके आधार पर क्या मांग रखी?

› पहला कदम: 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' का अर्थ समझना। इसमें 'द्वि' का मतलब 'दो' और 'राष्ट्र' का मतलब 'देश' या 'कौम' था।

› दूसरा कदम: यह सिद्धांत मानता था कि भारत किसी एक कौम का नहीं बल्कि 'हिंदू' और 'मुसलमान' नाम की दो कौमों का देश है।

› तीसरा कदम: इस सिद्धांत के आधार पर, मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग देश की मांग की, जिसे 'पाकिस्तान' कहा गया।

उत्तर – द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के अनुसार भारत दो मुख्य कौमों (हिंदू और मुसलमान) का देश था। इसी आधार पर मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग देश 'पाकिस्तान' की मांग की थी।

उदाहरण 3. मान लीजिए विभाजन के दौरान, हमें यह तय करना है कि एक ऐसे गाँव का क्या होगा जहाँ आधे लोग 'X' धर्म के हैं और आधे 'Y' धर्म के, और वह गाँव एक ऐसे इलाके में है जिसे 'X' धर्म-बहुल माना जा रहा है।

› पहला कदम: 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के अनुसार, यदि यह गाँव 'X' बहुल क्षेत्र में है, तो इसे 'X' देश में जाना चाहिए।

› दूसरा कदम: लेकिन गाँव में 'Y' धर्म के भी लोग हैं, और वे 'Y' देश में शामिल होना चाहते हैं।

› तीसरा कदम: इस स्थिति में, प्रशासनिक इकाई (जैसे जिला या तहसील) के स्तर पर देखा जाता था कि कुल आबादी में किस धर्म के लोग ज़्यादा हैं।

› चौथा कदम: अगर समग्र क्षेत्र 'X' बहुल निकला, तो गाँव को 'X' देश में शामिल किया गया, भले ही 'Y' धर्म के लोग असहमत हों। इससे 'Y' धर्म के लोगों के लिए अल्पसंख्यक होने की समस्या पैदा हुई।

उत्तर – ऐसी स्थिति में, गाँव को 'X' देश का हिस्सा बना दिया गया, जिससे 'Y' धर्म के लोग वहां 'अल्पसंख्यक' बन गए और उन्हें मजबूरन प्रवास या असुरक्षा का सामना करना पड़ा।

उदाहरण 4. विभाजन के मुख्य मानवीय परिणामों में से किन्हीं तीन का वर्णन करें।

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि विभाजन सिर्फ़ ज़मीनों का नहीं, लोगों का भी था।

› पहला परिणाम था बड़े पैमाने पर विस्थापन: लगभग 80 लाख लोगों को अपना घर-बार छोड़कर सीमा पार जाना पड़ा। ये इतिहास के सबसे बड़े स्थानान्तरणों में से एक था।

› दूसरा परिणाम था भीषण सांप्रदायिक हिंसा: लाहौर, अमृतसर, कलकत्ता जैसे शहर दंगों के अखाड़े बन गए। अनुमान है कि 5 से 10 लाख लोगों ने अपनी जान गंवाई।

› तीसरा परिणाम था महिलाओं पर अत्याचार और शरणार्थी संकट: हज़ारों महिलाओं का अपहरण हुआ, उन्हें जबरन शादी करनी पड़ी। जो लोग बच गए, उन्हें महीनों या सालों तक शरणार्थी शिविरों में अमानवीय परिस्थितियों में रहना पड़ा।

उत्तर – विभाजन के मुख्य मानवीय परिणामों में बड़े पैमाने पर विस्थापन (80 लाख लोग), भीषण सांप्रदायिक हिंसा (5-10 लाख मौतें), और महिलाओं का अपहरण तथा शरणार्थी संकट शामिल थे।

उदाहरण 5. महात्मा गांधी ने विभाजन के दौरान शांति स्थापित करने के लिए कौन-कौन से प्रमुख तरीके अपनाए?

› पहला तरीका था, व्यक्तिगत रूप से उन इलाकों का दौरा करना जहाँ हिंसा भड़की हुई थी। वे लोगों के बीच जाते थे, उनसे सीधे बात करते थे।

› दूसरा तरीका था, उपवास रखना। जब लोग हिंसा नहीं रोकते थे, तो गांधी जी आमरण अनशन पर बैठ जाते थे, जिससे लोगों पर भावनात्मक दबाव पड़ता था।

› तीसरा तरीका था, लोगों से प्रेम, सद्भाव और अहिंसा का पाठ पढ़ाना। वे बार-बार समझाते थे कि सभी धर्मों का सम्मान करना ज़रूरी है।

› उन्होंने दिल्ली और कोलकाता में शांति स्थापित करने के लिए विशेष प्रयास किए, जहाँ सांप्रदायिक दंगे सबसे ज़्यादा भड़के थे।

उत्तर – गांधी जी ने हिंसाग्रस्त इलाकों का दौरा किया, उपवास किए और प्रेम व अहिंसा का संदेश देकर शांति स्थापित करने का प्रयास किया।

उदाहरण 6. हैदराबाद रियासत के विलय में क्या मुख्य समस्याएँ थीं और उनका समाधान कैसे हुआ?

› हैदराबाद रियासत भारत के बीच में स्थित थी, और उसका शासक, निज़ाम, चाहता था कि वह स्वतंत्र रहे।

› निज़ाम ने भारत के साथ एक साल का 'यथास्थिति समझौता' (Standstill Agreement) किया, लेकिन इस दौरान भी वह स्वतंत्र रहने की कोशिश करता रहा।

› हैदराबाद की जनता, खासकर तेलंगाना के किसान, निज़ाम के दमनकारी शासन से दुखी थे और उन्होंने विद्रोह शुरू कर दिया।

› निज़ाम ने इस आंदोलन को कुचलने के लिए एक अर्ध-सैनिक बल 'रज़ाकार' का इस्तेमाल किया, जिन्होंने हिंसा फैलाई।

› भारत सरकार ने हस्तक्षेप किया और सितंबर 1948 में भारतीय सेना ने हैदराबाद में प्रवेश किया। इसे 'ऑपरेशन पोलो' भी कहा जाता है।

› निज़ाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और इस तरह हैदराबाद का भारत में विलय हो गया।

उत्तर – हैदराबाद के निज़ाम की स्वतंत्रता की इच्छा और जनता पर दमन मुख्य समस्या थी। भारतीय सेना के हस्तक्षेप से निज़ाम ने आत्मसमर्पण किया और हैदराबाद भारत का हिस्सा बना।

उदाहरण 7. सरदार पटेल ने रजवाड़ों को भारत में शामिल करने के लिए किस मुख्य दस्तावेज का इस्तेमाल किया और उसका क्या अर्थ था?

› पहला कदम: सरदार पटेल ने रजवाड़ों के शासकों से मुलाकात की और उन्हें समझाया कि भारतीय संघ में शामिल होना उनके और उनके राज्य के लोगों के लिए बेहतर क्यों है।

› दूसरा कदम: शासकों को 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' (Instrument of Accession) नाम के एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी किया।

› तीसरा कदम: इस पत्र पर हस्ताक्षर का मतलब था कि रियासतें स्वेच्छा से भारतीय संघ का हिस्सा बनने के लिए तैयार हैं, और इसके बदले में उनकी कुछ आंतरिक स्वायत्तता (internal autonomy) बनी रहेगी।

उत्तर – सरदार पटेल ने 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' (अधिग्रहण के उपकरण) नामक दस्तावेज़ का इस्तेमाल किया। इसका अर्थ था कि संबंधित रियासतें भारतीय संघ का अंग बनने के लिए सहमत हैं।

उदाहरण 8. हैदराबाद रियासत का भारत में विलय क्यों और कैसे हुआ, संक्षेप में बताइए।

› हैदराबाद का शासक, निजाम, दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक था और हैदराबाद को स्वतंत्र रखना चाहता था। उसने नवंबर 1947 में भारत के साथ 'यथास्थिति बहाल रखने का समझौता' किया था।

› निजाम का शासन बहुत दमनकारी था, खासकर तेलंगाना के किसानों और महिलाओं पर अत्याचार होते थे। इसके खिलाफ एक बड़ा जन आंदोलन शुरू हुआ, जिसमें कम्युनिस्ट और हैदराबाद कांग्रेस प्रमुख थे।

› निजाम ने आंदोलन को दबाने के लिए 'रजाकारों' नाम के अपने अर्ध-सैनिक बल को भेजा। रजाकार बहुत ही सांप्रदायिक और अत्याचारी थे, उन्होंने गैर-मुसलमानों पर अत्याचार किए, लूटपाट, हत्या और बलात्कार किए।

› हालात बेकाबू होते देख, भारत सरकार ने सितंबर 1948 में अपनी सेना हैदराबाद भेजी। भारतीय सेना ने निजाम के सैनिकों को हराया।

› कुछ दिनों की लड़ाई के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और इस तरह हैदराबाद का भारत में विलय हो गया।

उत्तर – हैदराबाद का भारत में विलय निजाम के दमनकारी शासन, रजाकारों के अत्याचारों और जन आंदोलन के कारण हुआ, जिसमें अंततः भारतीय सेना ने हस्तक्षेप किया और 1948 में निजाम के आत्मसमर्पण के बाद हैदराबाद भारत का अभिन्न अंग बन गया।

उदाहरण 9. भारतीय संघ में मणिपुर के विलय की प्रक्रिया को संक्षेप में समझाइए।

› पहला कदम यह था कि महाराजा बोधचंद्र सिंह ने भारत सरकार के साथ एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसमें उन्हें आश्वासन दिया गया कि मणिपुर की अपनी आंतरिक स्वायत्तता बनी रहेगी।

› इसके बाद, लोगों के बढ़ते दबाव में, महाराजा ने जून 1948 में चुनाव करवाए। यह चुनाव 'सार्वभौम वयस्क मताधिकार' के सिद्धांत पर आधारित थे, यानी हर वयस्क नागरिक को वोट देने का अधिकार था। यह भारत में पहली बार हुआ था।

› चुनाव के बाद मणिपुर में संवैधानिक राजतंत्र स्थापित हुआ। लेकिन, मणिपुर की विधानसभा में इस बात पर गहरे मतभेद थे कि रियासत को भारत में मिलाया जाए या नहीं। कांग्रेस पार्टी विलय के पक्ष में थी, जबकि बाकी राजनीतिक दल इसके खिलाफ थे।

› आखिरकार, भारत सरकार ने महाराजा बोधचंद्र सिंह पर दबाव बनाया और उन्हें भारतीय संघ में शामिल होने के समझौते, यानी 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी कर लिया।

› सितंबर 1949 में महाराजा ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए और इस तरह मणिपुर भारतीय संघ का हिस्सा बन गया।

उत्तर – मणिपुर का विलय सहमति पत्र, सार्वभौम वयस्क मताधिकार पर आधारित चुनाव, और अंत में भारत सरकार के दबाव के कारण महाराजा द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के माध्यम से हुआ, जिससे यह 1949 में भारतीय संघ का हिस्सा बन गया।

उदाहरण 10. भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग क्यों उठी और आजादी के बाद भारतीय नेताओं ने इस पर क्या रुख अपनाया?

› पहला चरण: अंग्रेजों के समय प्रांतों की सीमाएँ प्रशासनिक सुविधा या जीती हुई जमीन के आधार पर तय थीं, जो स्थानीय भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान नहीं करती थीं।

› दूसरा चरण: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1920 के नागपुर अधिवेशन में वादा किया था कि आजादी के बाद राज्यों का पुनर्गठन भाषा के आधार पर होगा, ताकि देश की विविधता बनी रहे।

› तीसरा चरण: आजादी और विभाजन के बाद, भारतीय नेताओं को डर था कि भाषाई आधार पर राज्य बनाने से अव्यवस्था फैल सकती है और देश की एकता खतरे में पड़ सकती है। उन्हें लगा कि इससे विकास के ज़रूरी मुद्दों से ध्यान भटक जाएगा।

› चौथा चरण: इसलिए, केंद्रीय नेतृत्व ने शुरुआत में इस मसले को टालने का फैसला किया, जिससे लोगों में असंतोष बढ़ा।

उत्तर – भाषाई पुनर्गठन की मांग ब्रिटिश काल की कृत्रिम सीमाओं को बदलने और भाषाई-सांस्कृतिक पहचान को मान्यता देने के लिए उठी। आजादी के बाद, नेताओं ने शुरू में देश की एकता और अव्यवस्था के डर से इसे टालने का प्रयास किया।

उदाहरण 11. भाषाई आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य कौन सा था और उसके गठन की प्रमुख वजह क्या थी?

› सबसे पहले, यह समझना होगा कि भारत में कई भाषाई समूह थे जो अपनी अलग पहचान चाहते थे।

› मद्रास प्रांत में तेलुगु बोलने वाले लोग अपने लिए एक अलग राज्य 'आंध्र प्रदेश' की मांग कर रहे थे। इसे 'विशाल आंध्र आंदोलन' कहा गया।

› इस आंदोलन के नेता पोट्टी श्रीरामुलु ने 56 दिनों की भूख हड़ताल की, और इसी भूख हड़ताल के दौरान उनका निधन हो गया।

› उनके बलिदान के बाद पूरे देश में भाषाई आधार पर राज्य बनाने की मांग तेज हो गई, और सरकार को झुकना पड़ा।

› 1952 में, मद्रास से अलग करके तेलुगु भाषी लोगों के लिए आंध्र प्रदेश राज्य का गठन किया गया।

उत्तर – भाषाई आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य 'आंध्र प्रदेश' था। इसकी प्रमुख वजह तेलुगु भाषी लोगों द्वारा 'विशाल आंध्र आंदोलन' और पोट्टी श्रीरामुलु का बलिदान था।

उदाहरण 12. राज्य पुनर्गठन अधिनियम कब पारित हुआ और इसके क्या मुख्य परिणाम थे?

› पहला कदम: हमें याद रखना है कि राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर यह अधिनियम पारित हुआ था।

› दूसरा कदम: यह अधिनियम सन् 1956 में पारित किया गया था।

› तीसरा कदम: इसके परिणाम ये हुए कि भारत में भाषाई आधार पर 14 राज्य बनाए गए।

› चौथा कदम: साथ ही, 6 केंद्र-शासित प्रदेशों का भी गठन किया गया।

उत्तर – राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 में पारित हुआ, जिसके तहत 14 राज्य और 6 केंद्र-शासित प्रदेश बनाए गए।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधा पूछ लिया जाता है कि 'भारत के सामने राष्ट्र-निर्माण की प्रमुख चुनौतियाँ क्या थीं?' तीनों बिंदुओं को अच्छे से याद रखना और उनका मतलब समझाना बहुत ज़रूरी है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' क्या है और विभाजन की प्रक्रिया कैसे तय की गई, इन बिंदुओं को अच्छे से समझ कर लिखना सीखें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 5 या 6 नंबर का सीधा सवाल आता है कि 'विभाजन की मुख्य कठिनाइयाँ क्या थीं?' या 'विभाजन के समय अल्पसंख्यकों की समस्या पर टिप्पणी करें।' इन बिंदुओं को अच्छे से समझकर लिखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर, विभाजन के मानवीय परिणामों पर सीधा प्रश्न पूछा जाता है। ध्यान रखना कि इसमें केवल संख्याएँ नहीं, बल्कि उसके पीछे का दर्द और लोगों की भावनाएँ भी लिखनी होती हैं।

• गांधी जी की धर्मनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्धता और उनकी शहादत के प्रभावों पर अक्सर बोर्ड परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से तैयार करना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हैदराबाद और मणिपुर के विलय की कहानियों को खास तौर पर ध्यान से पढ़ना और समझना, क्योंकि इन पर अक्सर विस्तृत प्रश्न पूछे जाते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। खासकर सरकार के तीन प्रमुख नज़रियों और सरदार पटेल की भूमिका को बिंदुओं में याद रखना और 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' को परिभाषित करना सीखो।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में 'रजवाड़ों के विलय' वाले बड़े प्रश्न का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। निजाम, रजाकार और भारतीय सेना के हस्तक्षेप को विस्तार से समझाना याद रखें।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि भाषाई आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य कौन सा था और राज्य पुनर्गठन आयोग के गठन की पृष्ठभूमि क्या थी। इसे ध्यान से पढ़ना।

एक नज़र में रिवीज़न

› 1947: राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र स्थापना, समावेशी विकास प्रमुख चुनौतियाँ थीं।

› विभाजन: द्वि-राष्ट्र सिद्धांत (मुस्लिम लीग), धार्मिक बहुसंख्या पर आधारित प्रक्रिया।

› विभाजन की कठिनाइयाँ: बिखरे क्षेत्र, विरोध (खान), अल्पसंख्यक समस्या, हिंसा/विस्थापन।

› विभाजन: 80 लाख विस्थापन, 5-10 लाख मौतें, महिला हिंसा, शरणार्थी संकट.

› गांधी जी की शहादत ने धर्मनिरपेक्ष भारत के आदर्श को मजबूत किया।

› आज़ादी पर रजवाड़ों की स्वतंत्रता की चुनौती; सरदार पटेल का विलय में योगदान।

› सरकार का लचीला रुख, सरदार पटेल की दृढ़ता, इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन द्वारा रजवाड़ों का एकीकरण।

› हैदराबाद का विलय: निजाम का दमन, रजाकार, जन आंदोलन, भारतीय सेना का हस्तक्षेप (1948)।

› पोट्टी श्रीरामुलु के बलिदान से आंध्र प्रदेश (1952) बना, फिर राज्य पुनर्गठन आयोग (1953) आया।